संकल्प

सब संकल्प का ही अविष्कार है। जैसे संकल्प किये जाते हैं, उसी रूप में जगत की स्थिति होती है। संकल्प ही जगत है। जैसा पुरुष संकल्प करता है, वैसा ही वह स्वयं हो जाता है। जैसे -----

सति सक्तोनरोयाति, सद्भावं ह्योक निष्ठ्या। कीटको भ्रमरीं ध्यायन्, भ्रमरत्वय कल्पते।।

जैसे भ्रमरी का ध्यान करता कीट, भ्रमरत्व को प्राप्त होता है। इसी प्रकार एक निष्ठा से ब्रह्म का ध्यान करता हुआ मनुष्य ब्रह्मत्व को प्राप्त हो जाता है। अतः हम सभी को सावधान हो कर बारंबार ब्रह्म का ही चिंतन करना चाहिये। इसी पर एक महात्मा ने कहा है -----

जो मन नारी की ओर निहारत, तो मन होत है नारी के रूपा।
जो मन काहू से क्रोध करे, तब क्रोध मयी हो जाये तद्रूपा।।
जो मन माया ही माया रटे नित, तो मन डूबत माया के कूपा।
सुंदर जो मन ब्रह्म विचारत, तो मन होत है ब्रह्म स्वरूपा ।।

धीर बनो और संयम में रहो। समग्र जीवन के सुख के लिये संयम आवश्यक है। ज्ञानी पुरुष वर्तमान सुखों का त्याग करता है, यदि ऐसे त्याग से उसे भविष्य में अधिक सुख मिल सकता है। यही नहीं वह वर्तमान दुःखों को भी स्वीकार कर लेता है, ताकि भविष्य में सुख भोग सके। विषयों का दास होना भविष्य में सुख भोगने के अयोग्य बना देता है।

जीवन का आदर्श यह है कि हम अपनी पृथक हस्ति का त्याग कर देवें और अपने देश को, जहाँ से हम आये हैं फिर जायें। अर्थात् उस ब्रह्म में जिससे हम उत्पन्न हुए हैं लीन हो जायें। यह अंतिम आदर्श है। अच्छे कर्म हमें इस आदर्श तक नहीं ले जा सकते किंतु वह प्रारम्भिक सोपान है, उनके पीछे विचार की मंजिल आती है। विचार भी परमात्मा का शुद्ध स्वरूप नहीं दिखलाता, एक सीमा तक हम इसे साथ ले जाते हैं उसके पश्चात इसका त्याग कर देते हैं। जिस प्रकार एक ऊँचे स्थान पर पहुँच कर हम उस सीढ़ी को जिस पर से हम चढ़े हैं छोड़ देते है, उसी प्रकार एक स्थान पर पहुंच कर हम कर्मों और विचारों को छोड़ देते हैं। यह हमें हमारे ग्रह की द्योढ़ी तक ले जाते हैं इससे आगे जाने का इनको अधिकार नहीं, अंतिम और अगली मंजिल भक्ति और योग की सहायता से पूरी होती है। इस अवस्था में मेरे-तेरे का भेद, जो कर्म और ज्ञान के समय में विद्यमान था, जाता रहता है। जीव अपने आप को ब्रह्म से प्रथक नहीं जानता-समझता और जिस प्रकार जल बिंदु जिसे सूर्य की किरणें समुद्र की गोदी से प्रथक कर देती हैं, वर्षो के भ्रमण के पीछे फिर समुद्र में जा मिलता है, उसी प्रकार हम सारी तपस्या के पीछे परमात्मा में लीन हेा जाते हैं।

यह अवस्था मनुष्य के अपने यतन का परिणाम नहीं होती वरंच परमात्मा की कृपा से ही प्राप्त होती है। अतएव परमात्मा के प्रेम में जो कुछ हो सके थोड़ा है। उन्हें ब्रह्माण्ड के सकल पदार्थ उच्च स्वर से पुकार रहे हैं। संसार की सुंदर वस्तुऐं एक विशेष सौंदर्यता की साक्षी हैं। प्रत्येक मधु वस्तु अति उत्तम मधु को दर्शाती है।

बोलो प्रेम से सच्चिदानंद सनातन ब्रह्म की जय।